सैन डिएगो में भारतीय कला के स्वर

दीपांजली काकाती

कैलिफ़ोर्निया के सैन डिएगो म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट ने पहली बार एशिया के बाहर भारत में आधुनिक चित्रकला के जनक आचार्य नन्द लाल बोस के चित्रों की प्रदर्शनी आयोजित की। 23 फ़रवरी से 18 मई तक चलने वाली ''रिद्म्स ऑफ़ इंडिया : द आर्ट ऑफ़ नन्द लाल बोस'' में कलागुरु की लगभग श्रेष्ठतम कृतियां प्रदर्शित हैं।

''ग्राम कुटीर'' की सहज सुंदरता से ''ढाकी और शहनाईवाला'' के घूमते स्ट्रोकों तक, 'नवमेघ' की ग्रामीण दृश्यावली से 'दांडी कूच-बापू जी' की स्पष्ट रेखाओं तक, प्रदर्शनी विभिन्न शैलियों और अंकन माध्यमों पर आचार्य बोस की पकड़ को दिखाती है।

संग्रहालय के कार्यकारी निदेशक डेरिक आर. कार्टराइट कहते हैं,''भारतीय कला के इतिहास में नन्द लाल बोस एक युग प्रवर्तक थे, उनके चित्रों, रेखांकनों और भित्ति चित्रों का शुद्ध सौंदर्य और परिष्कृति दर्शकों को बांध लेगी। इसके अलावा प्रदर्शनी अमेरिका में सैन डिएगो म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट के भारतीय कला सम्बन्धी विद्वता के प्राथमिक स्रोत के रूप में उभरने को स्थापित करती है।''

एक विशेष वीथि में प्रदर्शित करीब 15 चित्र महात्मा गांधी से चित्रकार के निकट सम्पर्क के माध्यम से औपनिवेशक शासन से भारत की मुक्ति के संघर्ष में उनके योगदान को रेखांकित करते हैं। भारत की स्वतंत्रता और महात्मा गांधी की हत्या की 61वीं वर्षगांठ के इस वर्ष में प्रदर्शनी का अपना ही महत्व है।

प्रदर्शनी के कैटलॉग में छपे अपने संदेश में अमेरिका में भारतीय राजदूत रोनेन सेन ने लिखा, ''नन्दलाल बोस के चित्रों की व्यापक विषयावली भारत की सभ्यतात्मक विरासत की दृढ़ता और सतता, औपनिवेशिक शासन के दौरान हमारी

फोटो: साभार सैन डिएगो कला संग्रहालय

ऊपर: शहनाईवाला, कागज़ पर रंग 62.9 x 56 से.मी., 1937
बाएं: भैंसे की सवारी, कागज़ पर स्याही, 34 x 17.3 से.मी., 1944

सरकारी-निजी भागीदारी के बूते नन्दलाल बोस की बहुआयामी कला पहली बार अमेरिका पहुंची।

नए बादल, कागज़ पर टेम्पेरा, 42.2 x 69.9 से.मी., 1937

अजेय इच्छा शक्ति, और एक अनूठे संघर्ष के बाद एक लोकतांत्रिक और बहुलतावादी राष्ट्र के रूप में हमारे अभ्युदय को प्रकट करती है।'' अपने एडविन बिन्नी तृतीय संग्रह, भारत के राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, और निजी और सार्वजनिक संग्रहों से चुने नन्दलाल बोस के चित्रों की प्रदर्शनी आयोजित करके सैन डिएगो म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट ने एक नए भारतीय कला रूप के विकास में उनके योगदान का व्यापक परिदृश्य प्रदर्शित किया है।

भारत सरकार और नई दिल्ली के राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय के सहयोग से आयोजित यह प्रदर्शनी भारत और अमेरिका के बीच आपसी समझदारी और सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ाने के लिए सार्वजनिक-निजी साझेदारी का एक उदाहरण है। नई दिल्ली स्थित अमेरिकी दूतावास और विदेश मंत्रालय ने इस पहल को प्रोत्साहित किया और सैन डिएगो म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट के प्रतिनिधियों की भारत यात्राओं के दौरान उन्हें परामर्श दिया। अमेरिकी राजदूत डेविड सी. मल्फ़र्ड और सहायक विदेश मंत्री रिचर्ड बाउचर ने सैन डिएगो म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट के भारतीय सहयोगियों से सम्पर्क करके कला सामग्रियां उधार दिए जाने की प्रक्रिया के रास्ते की बाधाएं हटवाईं।

1882 में बिहार में जन्मे नन्दलाल बोस के जीवन का अधिकांश हिस्सा बंगाल में बीता। अपने कलाजीवन के शुरुआती दौर में वह उन बहुत से कलाकारों में से एक थे जो सदियों के ब्रिटिश प्रभाव से धुंधलाई भारतीय कला के आध्यात्मिक तेज और सांस्कृतिक खरेपन को पुनर्जीवित करना चाहते थे।

अगले दशकों में नन्दलाल बोस ने विभिन्न भारतीय, जापानी और चीनी प्रविधियों से प्रयोग करते हुए कलाकार के रूप में अपना एक विशेष स्थान बना लिया। उनके चित्रों में प्राकृतिक दृश्य और जनजातीय और ग्रामीण जीवन की छवियां और आध्यात्मिक विषय प्रमुख हैं। ग्रामीण भारत के पश्चिमी प्रभाव से मुक्त उनके चित्रण ने महात्मा

ज़्यादा जानकारी के लिए:

सैन डिएगो कला संग्रहालय
www.sdmart.org

राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली
http://www.ngmaindia.gov.in/

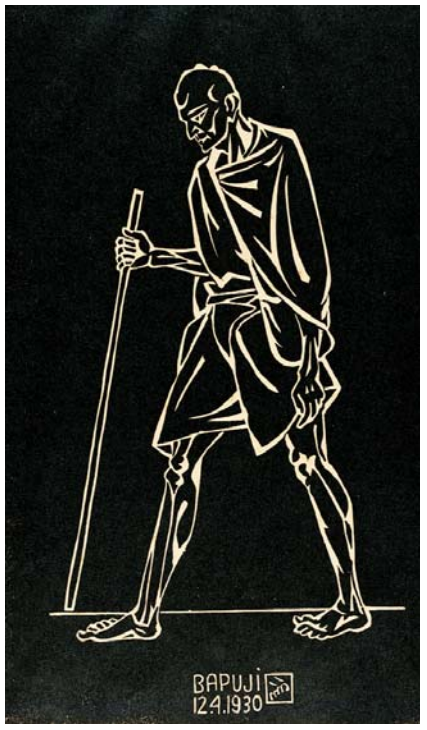

दांडी मार्च (बापूजी), कागज़ पर लाइनोकट, 34.9 x 22.5 से.मी., 1930

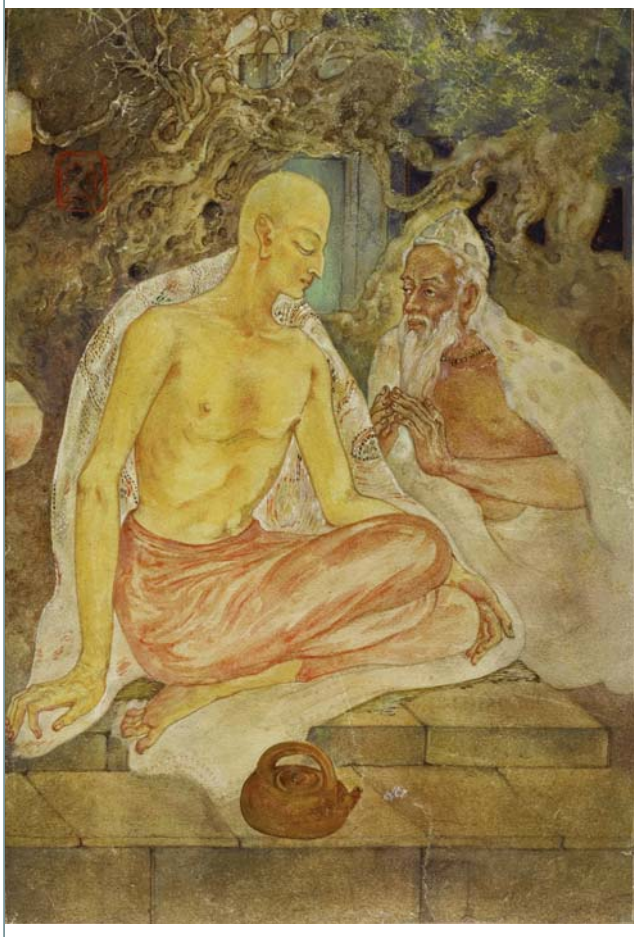

चैतन्य एवं हरिदास, कागज़ पर जलरंग, 24.8 x 17.1 से.मी., लगभग 1942. सुप्रतीक बोस का संग्रह

गांधी का ध्यान आकर्षित किया। पारम्परिक भारत के उन चित्रों में गांधीजी को अपने अहिंसा आंदोलन का प्रतिबिम्ब दिखा।

प्रदर्शनी के कैटलॉग में छपे अपने संदेश में राजदूत मल्फ़र्ड ने लिखा, ''आधुनिक भारतीय कला के विकास और स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले और बाद के वर्षों में उसे परिभाषा प्रदान करने में नन्दलाल बोस की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही। उनकी कृतियों की इस प्रदर्शनी और ऐसी ही अन्य प्रदर्शनियों में हमारे लोगों के बढ़ते सम्पर्क और एक-दूसरे की समृद्ध संस्कृतियों को समझ पाने और भविष्य में अधिक मज़बूत साझेदारियां तैयार करने की भारतीयों और अमेरिकियों की इच्छा झलकती है।''

गांव की झोंपड़ियां, कागज़ पर जलरंग, 20.6 x 39.6 से.मी., 1928.